द्वितीय अध्याय

भीमकथा पर आधारित अन्य काव्य ग्रंथ

द्वितीय अध्याय
"भीमकथा पर आधारित अन्य काव्य ग्रंथ"

प्रस्तावना :

धरती पर अनेक महामानवों ने जन्म लेकर अपने विचारों को अपने कार्य के आधार पर जनता के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनमें से कुछ चुनिंदा महामानवों की जीवनियाँ आज उपलब्ध होती है। उन महामानवों में बोधिसत्व, भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

'भीमकथा' से तात्पर्य :

'भीमकथा' में 'भीम' और 'कथा' यह दो शब्द है। इनमें से 'भीम' यह शब्द डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के 'भीमराव' इस नाम से संबंधित है। डॉ.अम्बेडकर जी को बचपन में 'भीम' या 'भीवा' कहकर बुलाया जाता था। उनका जन्म दलित जाति में हुआ था। दलित जाति में एक ऐसी प्रथा होती थी है कि, वे अपने बच्चों का नाम माता, दादाजी, परदादाजी के नाम पर आधारित रखते है। इसके कारण ही डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी का 'भीमराव' यह नाम उनकी माता के 'भीमाबाई' इस नाम के आधार पर रखा था।

डॉ. अम्बेडकर जी ने अपने पूरे जीवन में दलित, पीडित, शोषित जाति के लोगों का उद्धार किया है। इसके कारण हिंदी के कुछ कवियों ने उनके द्वारा किए कार्यों का तथा उनके जीवन चरित्र का परिचय भारत के साथ पूरे विश्व को हो जाए इसके लिए उन्हें केंद्र में रखकर अनेक काव्य ग्रंथों का सृजन किया है। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रंथों का विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है।

2.1 क्रांतिदूत अम्बेडकर :

'क्रांतिदूत अम्वेडकर' काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'बुद्ध संघ प्रेमी' जी ने किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि बुद्ध संघ प्रेमी जी ने भारतीय समाज व्यवस्था में क्रांति लाने का कार्य करने वाले भारतरत्न डॉ. वावासाहव अम्वेडकर के जीवन पर आधारित कथावस्तु

का सृजन किया है।

विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ.अम्बेडकर के द्वारा किए विभिन्न कार्यों का वर्णन किया है। इसके साथ डॉ. अम्बेडकर जी ने भारत देश के दलित, शोषित, पीडित लोगों के जीवन में क्रांति लाने का कार्य किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ की कथावस्तु में कवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के जीवन से जुड़ी घटनाओं का वर्णन किया है। इसके साथ ही उनके द्वारा किए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा शैक्षिक कार्यों का वर्णन विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने अच्छी तरह से किया है।

2.2 भीम-सागर :

'भीम-सागर' प्रबंध काव्य के रचयिता कवि 'लक्ष्मीनारायण सुधाकर' जी है। प्रस्तुत प्रबंध काव्य का प्रकाशन 'हरित प्रकाशन मण्ड़ल; शाहदरा, दिल्ली' से सन् **1985** ई. को हुआ है। 'भीम-सागर' प्रबंध काव्य का विभाजन कवि ने सात सर्गों में किया है।

'भीम-सागर' काव्य ग्रंथ की कथा भारतरत्न डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के समग्र जीवन पर आधारित है। इसमें अम्बेडकर के जन्म से लेकर महापरिनिर्वाण तक की प्रमुख घटनाओं का वर्णन मिलता है। 'भीम-सागर' प्रबंध काव्य में डॉ.अम्बेडकर के द्वारा किए राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन मिलता है। प्रस्तुत प्रबंध काव्य के बारे में डॉ. नारायण दत्त पालीवाल जी कहते है कि, "यह एक प्रकार से उनके जीवन से जुड़े हुए ऐतिहासिक तथ्यों का विवेचन है, जिसमें कविता के माध्यम से उनके पारिवारिक जीवन, उनकी सामाजिक मान्यता तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके द्वारा किए कार्यों, संघर्षों और उनके द्वारा स्थापित आदर्शों का अपने ही ढ़ंग से मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।"[1] इसके साथ ही कवि ने विवेच्य प्रबंध काव्य में डॉ. अम्बेडकर के द्वारा किए विभिन्न सामाजिक, धार्मिक कार्यों का विभाजन किया है।

---

[1]. लक्ष्मीनारायण सुधाकर - भीम-सागर, एक विचार से उद्धृत.

2.3 अम्बेडकर-शतक :

'अम्वेडकर-शतक' काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'लक्ष्मीनारायण सुधाकर' जी ने किया है। प्रस्तुत काव्य ग्रंथ कवि के द्वारा डॉ. अम्वेडकर के जीवन चरित्र पर लिखित अद्वितीय काव्य ग्रंथ है। 'अम्वेडकर-शतक' काव्य ग्रंथ का प्रकाशन 'भारतीय दलित साहित्य मंच (रजि) दिल्ली' से दि. 14 अप्रैल, सन् 1994 ई. को हुआ है।

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ का सृजन कवि ने सौ छंदों में किया है। 'अम्वेडकर-शतक' काव्य ग्रंथ के बारे में कवि लक्ष्मीनारायण सुधाकर जी ने लिखा है कि, "अम्वेडकर-शतक मात्र यशोगान नहीं है, अपितु इसमें तथागत गौतम बुद्ध के लोकोपकारी सदोपदेशों एवं संदेशों जिनसे बोधिसत्व अम्वेडकर का रोम-रोम रोमांचित और आप्लावित रहता था, उस शाश्वत 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' बुद्धवाणी का सम्यक सार सुविज्ञ पाठकों के चिंतन को एक नई दिशा देने के क्षम्य उद्देश्य से इन छंदों में पिरोने का सद्प्रयास किया गया है।"[1] प्रस्तुत काव्य ग्रंथ की कथावस्तु डॉ. अम्वेडकर जी के व्यक्तित्त्व पर आधारित है। विवेच्य काव्य ग्रंथ के माध्यम से अम्वेडकर के जीवन से जुड़ी कथा को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास कवि सुधाकर जी ने किया है।

2.4 अम्बेडकर :

'अम्वेडकर' काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'के.आर.निर्मल' जी ने किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि निर्मल जी ने डॉ. वावासाहव अम्वेडकर जी के जन्म से लेकर निर्वाण तक की कथा को विस्तृत रूप से प्रस्तुत की है। इसके साथ ही विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ. अम्वेडकर को उनके जीवन में आई अनेक कठिनाईयों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। तथा डॉ. अम्वेडकर जी के द्वारा किए महाड़ तालाव सत्याग्रह, अम्वादेवी मंदिर प्रवेश सत्याग्रह, मनुस्मृति का दहन आदि सत्याग्रहों का वर्णन विवेच्य काव्य ग्रंथ में मिलता है।

2.5 भीम-चरित मानस :

'भीम-चरित मानस' काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'गोकरन लाल करूणाकर' जी ने

---

[1]. लक्ष्मीनागयण सुधाकर - अम्वेडकर-शतक, दो शब्द से उदधृत

किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ का प्रकाशन 'कल्चरल पब्लिशर्स, लखनऊ' से सन् 1984 ई. में हुआ है। विवेच्य काव्य ग्रंथ का विभाजन कवि ने पंद्रह भागों में किया है।

'भीम-चरित मानस' काव्य ग्रंथ की कथावस्तु डॉ. वावासाहव अम्वेडकर के जीवन चरित्र पर आधारित है। कवि गोकरन लाल करूणाकर जी ने प्रस्तुत काव्य ग्रंथ के वारे में लिखा है कि, "गाँवों, उपनगरों और महानगरियों की मलिन वस्तियों में रहनेवाले असंख्य दलित, शोषित और पीड़ित जनता में आल्हा छंद के माध्यम से वावा का संदेश पहुँचाने का प्रयास ही इस पुस्तक का कारण बना।"[1] इसके साथ ही कवि ने दोहा, कवित्त, सवैया आदि छंदों का प्रयोग किया है। कवि ने प्रस्तुत काव्य ग्रंथ में डॉ. अम्वेडकर के जन्म, वचपन, शिक्षा आदि घटना प्रसंगों का वर्णन विस्तृत रूप से किया है। साथ ही अम्वेडकर के द्वारा किए विभिन्न सत्याग्रहों का विवेचन प्रस्तुत काव्य ग्रंथ के माध्यम से कवि ने किया है।

2.6 भीम चेतावनी :

'भीम चेतावनी' काव्य ग्रंथ के रचयिता कवि 'डॉ. लाल चंद्र राही' जी है। प्रस्तुत काव्य ग्रंथ की कथावस्तु डॉ. अम्वेडकर जी के समग्र जीवन पर आधारित है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में डॉ.अम्वेडकर जी के द्वारा किए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक क्षेत्र के कार्यों की जानकारी मिलती है। इसके साथ ही डॉ.अम्वेडकर जी के जन्म, माता-पिता, शिक्षा, दीक्षा आदि से संवंधित सभी जानकारी विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने प्रस्तुत की है। साथ ही कवि डॉ. लाल चंद्र राही जी ने दलित, शोषित, पीडित लागों के साथ भारतीय समाज की नारी की दयनीय स्थिति का वर्णन विवेच्य काव्य ग्रंथ में किया है।

2.7 भीम-शतक :

'भीम-शतक' काव्य ग्रंथ का निर्माण कवि 'माता प्रसाद मित्र' जी ने किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ का प्रकाशन सन् 1986 ई. को 'दलित साहित्य अकादमी उ.प्र. लखनऊ' से हुआ है।

---

[1]. गोकरन लाल करूणाकर - भीम-चरित मानस, दो शब्द से उदधृत

विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि माता प्रसाद 'मित्र' जी ने डॉ. अम्बेडकर के पूरे जीवन चरित्र को सौ छंदों के माध्यम से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ के बारे में राजवैद्य माता प्रसाद 'सागर' जी कहते है कि, "इस कृति के पठन से पूज्य बावासाहब के जीवनोद्देश्य तथा संघर्षमयी जीवन चरित्र का वास्तविक तत्त्व मालूम होगा और सर्वहारा दलित, शोषित जनता का मानसिक विकास होगा, उसके ज्ञान और प्रगतिशीलता की अभिवृद्धि होगी।"[1] 'भीम-शतक' काव्य ग्रंथ में कवि माता प्रसाद 'मित्र' जी ने डॉ.अम्बेडकर जी के जन्म से लेकर निर्वाण तक की कथा को सौ छंदों के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

2.8 अम्बेडकर :

'अम्बेडकर' काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'बाबुलाल सुमन' जी ने किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि बाबुलाल सुमन जी ने डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर जी के जीवन से जुड़ी कथा को विस्तृत रूप से प्रस्तुत की है।

'अम्बेडकर' काव्य ग्रंथ के माध्यम से कवि बाबुलाल सुमन जी ने डॉ. अम्बेडकर की जीवनी को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत की है। इसके साथ ही प्रस्तुत काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के दवारा किए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक कार्यों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

2.9 भीमो-उत्स्वर :

'भीमा-उत्स्वर' प्रवंध काव्य के रचयिता कवि 'विमल प्रकाश सत्संगी' जी है। विवेच्य काव्य ग्रंथ का प्रकाशन 'ओमप्रकाश राजौरिया (प्रादेशिक महामंत्री), भारतीय रिपब्लिकन पार्टी उत्तर प्रदेश आगरा' से हुआ है।

'भीमो-उत्स्वर' काव्य ग्रंथ की कथावस्तु का विभाजन कवि विमल प्रकाश सत्संगी जी ने चार सर्गों में किया है। प्रस्तुत काव्य ग्रंथ के बारे में कवि सत्संगी जी कहते हैं कि, "भारतीय संविधान के निर्माता करोड़ों पददलितों के मसीहा परम पूज्य डॉ.बी.आर.

---

[1]. माता प्रसाद 'मित्र' - भीम-शतक, प्रस्तावना से उदधृत

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

अम्बेडकर के प्रभाविय सुशील तथा अविस्मरणीय जीवन चरित्र गाथा को मैंने वर्तमान भाषा शैली को सुगम, सरल तथा सुवोधता, का ध्यान रखते हुए, इस हृदयस्पर्शी पुस्तक को उच्च से उच्च बनाने का पूर्ण प्रयास करते हुए रचा है।"[1] भीमो-उत्स्वर' काव्य ग्रंथ की कथावस्तु के केंद्र में डॉ.अम्वेडकर है। प्रस्तुत काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ. अम्वेडकर के वचपन से लेकर जीवन के अंतिम समय तक की कथा को विस्तृत रूप में विभाजित की है।

2.10 अम्बेडकर शतक :

'अम्बेडकर शतक' काव्य ग्रंथ के रचयिता कवि 'डॉ.सोहनपाल सुमनाक्षर' जी है। प्रस्तुत काव्य ग्रंथ का सृजन कवि सोहनपाल सुमनाक्षर जी ने सौ छंदों में किया है।

'अम्बेडकर शतक' काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ. अम्बेडकर जी के जीवन से संबंधित पूरी कथा को काव्यात्मक रूप में पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ. बावासाहब अम्बेडकर के जन्म से लेकर महापरिनिर्वाण तक की कथा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

2.11 भीम प्रशस्ति :

'भीम प्रशस्ति' काव्य ग्रंथ के रचयिता कवि 'एन.आर.सागर' जी है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि सागर जी ने डॉ.वावासाहव अम्वेडकर के जीवन से संबंधित कथा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'भीम प्रशस्ति' काव्य ग्रंथ के माध्यम से कवि सागर जी ने डॉ.वावासाहव अम्बेडकर के दवारा किए कार्यों का वर्णन किया है। इसके साथ उनके जीवन से संवंधित विभिन्न घटनाओं का वर्णन विवेच्य काव्य ग्रंथ में मिलता है।

2.12 भीम-भारती :

'भीम-भारती' काव्य संग्रह के रचयिता कवि राजपाल सिंह 'राज' जी है। 'भीम-भारती' काव्य संग्रह का प्रकाशन सन् 1986 ई. को, 'राजलक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली' की ओर से हुआ है।

---

[1]. विमल प्रकाश सत्संगी - भीमो-उत्स्वर, प्रस्तावना से उदधृत

'भीम-भारती' काव्य संग्रह में कुल मिलाकर वीस कविताएँ हैं। विवेच्य काव्य संग्रह के वारे में कवि राजपाल सिंह 'राज' जी कहते है कि, "मैंने अपनी रचनाओं को 'भीम-भारती' काव्य संग्रह के रूप में वावासाहव के कार्यों को साहित्यिक गौरव प्रदान कर, समन्वय के आधार पर भीममयी उद्घोष किया है।"[1] विवेच्य काव्य संग्रह में कवि ने भीम-भारती, भीम परिचय, धर्मान्तर, कण-कण में भीम की छाया है, कर्म से महान, भीम-भक्त, दलितों के मालिक, बहुजन हिताय; बहुजन सुखाय ! नामक कविताओं को स्थान दिया है।

2.13 भीमचरितमानस :

'भीमचरितमानस' काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'डॉ.अनेकदास' जी ने किया है। प्रस्तुत काव्य ग्रंथ की कथा भारतरत्न, वोधिसत्व डॉ. बाबासाहव अम्वेडकर जी के जीवन से संबंधित है। विवेच्य काव्य ग्रंथ की कथावस्तु में डॉ.अम्वेडकर जी के जन्म से लेकर महापरिनिर्वाण तक की कथा को बहुत ही सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत करने का प्रयास कवि डॉ. अनेकदास जी ने किया है। इसके साथ ही अम्वेडकर जी के द्वारा किए कार्य उनकी शिक्षा, दीक्षा आदि का वर्णन विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है।

'भीमचरितमानस' काव्य ग्रंथ में कवि ने दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदि छंदों का अच्छी तरह से प्रयोग किया है।

2.14 भीमायण :

'भीमायण' काव्य ग्रंथ के रचयिता कवि 'विहारी लाल हरित' जी है। विवेच्य काव्य ग्रंथ का प्रकाशन 'हरित एण्ड कंपनी, दिल्ली' से हुआ है।

'भीमायण' काव्य ग्रंथ में कवि विहारी लाल हरित जी ने डॉ.वावासाहव अम्वेडकर की कथा को विस्तृत ढंग से प्रस्तुत की है। विवेच्य काव्यग्रंथ का विभाजन कवि ने छह अध्यायों में किया है। 'भीमायण' काव्य ग्रंथ के वारे में वावू जगजीवन राम जी कहते है कि, "श्री हरित ने इस पुस्तक में डॉ.अम्वेडकर की जीवनी, कार्यों एवं सिद्धांतों का दिग्दर्शन

---

[1]. राजपाल सिंह 'राज' - भीम-भारती, निवेदन से उद्धृत

सरल एवं काव्यमयी भाषा में किया है। पद्यों के साथ-साथ गद्यात्मक टीका देकर इन्होंने भाषा और विषय को और भी सरल वना दिया है। पुस्तक भाव-भाषा एवं विषय की दृष्टि से उपयोगी बन पड़ी है। रामचरितमानस की भाँति इस पुस्तक में भी दोहा, चौपाई आदि छंदों का प्रयोग किया है।"[1] 'भीमायण' काव्य ग्रंथ में कवि विहारी लाल हरित जी ने डॉ.अम्वेडकर की जीवन कथा को बहुत ही सुंदर रूप से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

2.15 डॉ.अम्बेडकर जीवन चरित्र (प्रथम भाग) :

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ के रचयिता कवि 'मिथन सिंह बौद्ध' जी है। विवेच्य काव्य ग्रंथ का प्रकाशन 'पंचशील लोक साहित्य दिल्ली' के द्वारा हुआ है।

कवि मिथन सिंह बौद्ध जी ने प्रस्तुत काव्य ग्रंथ में डॉ.अम्बेडकर के जन्म, शिक्षा, दीक्षा आदि का वर्णन किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने दोहा, आल्हा आदि छंदों के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर के जीवन चरित्र को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

2.16 डॉ. अम्बेडकर जीवन चरित्र (द्वितीय भाग) :

प्रस्तुत काव्य ग्रंथ का सृजन कवि 'मिथन सिंह बौद्ध' जी ने किया है। विवेच्य काव्य ग्रंथ में कवि ने डॉ. अम्वेडकर के द्वारा किए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक कार्यों का वर्णन दोहा इस छंद के माध्यम से सफलता के साथ किया है।

निष्कर्ष :

भीमकथा पर आधारित अन्य काव्य ग्रंथों का अध्ययन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि, हिंदी साहित्य में बीसवीं सदी के अंतिम चार दशकों में डॉ.अम्बेडकर के जीवन पर आधारित अनेक काव्य ग्रंथों का सृजन किया गया है।

भीमकथा पर आधारित अन्य काव्य ग्रंथों में लक्ष्मीनारायण सुधाकर द्वारा लिखित भीम-सागर; अम्वेडकर शतक, गोकरन लाल 'करूणाकर' जी द्वारा लिखित भीम-चरित मानस, विमल प्रकाश सत्संगी द्वारा लिखित भीमो-उत्स्वर, माता प्रसाद 'मित्र'

---

[1]. विहारी लाल हरित - भीमायण, शुभ कामना से उदधृत

द्वारा लिखित भीम-शतक, राजपाल सिंह 'राज' द्वारा लिखित भीम-भारती, विहारी लाल हरित द्वारा लिखित भीमायण, मिथन सिंह वौद्ध द्वारा लिखित डॉ.अम्वेडकर जीवन चरित्र प्रथम भाग और द्वितीय भाग, एन.आर.सागर द्वारा लिखित भीम प्रशस्ति, वावुलाल सुमन द्वारा अम्वेडकर, डॉ. लाल चंद्र राही द्वारा लिखित भीम चेतावनी, वुद्ध संघ प्रेमी द्वारा लिखित क्रांतिदूत अम्वेडकर आदि का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

उपर्युक्त सभी काव्य ग्रंथों की कथावस्तु में डॉ. अम्वेडकर जी के जीवन से संबंधित हर घटना को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इन काव्य ग्रंथों में डॉ.अम्बेडकर के जन्म, माता-पिता, शिक्षा, दीक्षा आदि के साथ उनके द्वारा किए सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि कार्यों का वर्णन मिलता है। इसके साथ ही उपर्युक्त सभी काव्य ग्रंथों का सृजन कवियों ने डॉ.अम्बेडकर जी की विचारधारा, उनके द्वारा किए कार्यों को समाज के सामने प्रस्तुत करने के लिए किया है। तथा डॉ. बाबासाहब अम्वेडकर के मिशन को आगे चलाने और उनके द्वारा किए कार्यों को देश के सभी लोगों के घर-घर में पहुँचाने के लिए किया है। इन सभी कवियों में मिशनरी वृत्ति के दर्शन होते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रभाषा हिंदी के जरिए डॉ.अम्वेडकर का मिशन और जीवन दर्शन प्रस्तुत करने के लिए विवेच्य सभी काव्य ग्रंथों का सृजन किया है।

डॉ.अम्वेडकर के मानवतावादी, प्रगतिशील, वैज्ञानिक, बौद्ध धर्म, दलित उत्थान संबंधी विचारों को भीम कवियों ने हिंदी भीम काव्य ग्रंथों में स्थान दिया है। भीम कवि डॉ.अम्वेडकर का गुणगान करते समय कभी-कभी भावविभोर हो जाते हैं तो कभी-कभी तटस्थ रूप से डॉ.अम्बेडकर के जीवन की घटना प्रसंगों की ओर देखते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि, उपर्युक्त सभी काव्य ग्रंथों का सृजन करके सभी कवियों ने एक ओर राष्ट्रभाषा हिंदी को समृद्ध वनाने का कार्य किया है। तो दूसरी ओर डॉ. अम्वेडकर के विचार दर्शन को भक्ति भाव से, राष्ट्रीय कर्तव्य मानकर प्रचार-प्रसार करने का प्रयास किया है।